HAS (Mains)-2021

This question paper contains 4 printed pages]

Roll Number

ASME-21-HLIT–(II)

हिंदी साहित्य (पेपर-II)

निर्धारित समय : 3 घंटे] [अधिकतम अंक : 100

प्रश्न पत्र सम्बन्धी विशेष अनुदेश

उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित निर्देशों को कृपया सावधानीपूर्वक पढ़ें।

1. इस प्रश्न पत्र में कुल **आठ** प्रश्न हैं जो हिंदी में छपे हैं।

2. प्रश्न संख्या 1 का उत्तर अनिवार्य है। शेष सात प्रश्नों में से किन्हीं **चार** के उत्तर दीजिए।

3. प्रत्येक प्रश्न के अंक समान हैं। प्रश्न के लिए निर्धारित अंकों का विभाजन प्रत्येक प्रश्न/प्रश्न के भाग के सामने इंगित किया गया है। उत्तर स्पष्ट लिखावट में लिखिए। प्रश्न का उत्तर पूछे गए क्रम के अनुसार ही दीजिए।

4. प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं है, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशतः दिया गया हो। उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काट दीजिए।

5. उत्तर पुस्तिका के पुनर्मूल्यांकन/पुनः जाँच की अनुमति नहीं है।

1. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 10+10=20

(क) बबुर-बहेरेको बनाइ बागु लाइयत,

रूँधिबेको सोई सुरतरु काटियतु है।

गारी देत नीच हरीचंदहू दधीचिहू को,

आपने चना चबाइ हाथ चाटियतु है॥

आपु महापातकी, हँसत हरि-हरहू को,

आपु है अभागी, भूरिभागी डाटियतु है।

कलिको कलुष मन मलिन किए महत,

मसककी पाँसुरीं पयोधि पाटियतु है॥

अथवा

ओ मेरे आदर्शवादी मन,

ओ मेरे सिद्धान्तवादी मन,

अब तक क्या किया ?

जीवन क्या जिया!!

उदरम्भरि बन अनात्म बन गये,

भूतों की शादी में कनात-से तन गये,

किसी व्यभिचारी के बन गये बिस्तर,

दु:खों के दाग़ों को तमग़ों-सा पहना,

अपने ही ख़यालों में दिन-रात रहना,

असंग बुद्धि व अकेले में सहना,

ज़िंदगी निष्क्रिय बन गयी तलघर,

अब तक क्या किया,

जीवन क्या जिया!!

(ख) मुझे विश्वास है कि विद्रोही बनते नहीं, उत्पन्न होते हैं। विद्रोहबुद्धि परिस्थितियों से संघर्ष की सामर्थ्य, जीवन की क्रियाओं से, परिस्थितियों के घात-प्रतिघात से नहीं निर्मित होती। वह आत्मा का कृत्रिम परिवेष्टन नहीं है, उसका अभिन्नतम अंग है। मैं नहीं मानता कि दैव कुछ है, क्योंकि हम में कोई विवशता, कोई बाध्यता है तो वह बाहरी नहीं, भीतरी है। यदि बाहरी होती, परकीय होती, तो हम उसे दैव कह सकते, पर वह तो भीतरी है, हमारी अपनी है, उसके पक्के होने के लिए भले ही बाहरी निमित्त हो। उसे हम व्यक्तिगत नियति—Personal destiny—कह सकते हैं।

अथवा

गंगी का विद्रोही दिल रिवाज़ी पाबन्दियों और मज़बूरियों पर चोटें करने लगा—हम क्यों नीच हैं और यह लोग क्यों ऊँच हैं ? इसलिए कि ये लोग गले में तागा डाल लेते हैं ? यहाँ तो जितने हैं, एक-से-एक छँटे हैं। चोरी ये करें, जाल-फरेब ये करें, झूठे मुकद्दमे ये करें। अभी इस ठाकुर ने तो उस दिन बेचारे गड़रिये की एक भेड़ चुरा ली थी और बाद में मारकर खा गया। इन्हीं पण्डित जी के घर में तो बारहों मास जुआ होता है। यही साहुजी तो घी में तेल मिलाकर बेचते हैं। काम करा लेते हैं, मजूरी देते नानी मरती है। किस बात में हैं हमसे ऊँचे। हाँ, मुँह से हमसे ऊँचे हैं। हम गली-गली चिल्लाते नहीं कि हम ऊँचे हैं, हम ऊँचे! कभी गाँव में आ जाती हूँ, तो रसभरी आँखों से देखने लगते हैं। जैसे सबकी छाती पर साँप लोटने लगता है, परन्तु घमण्ड यह कि हम ऊँचे हैं।

2. 'कबीरदास की साखियों में लोकजीवन से प्रेरित अप्रस्तुत-विधान' पर प्रकाश डालिए। 20

3. ''सूरदास रचित 'भ्रमरगीत' व्यंग्यात्मक शैली और वाग्विदग्धता के कारण अतीव प्रभावशाली बन पड़ा है''—कथन की युक्तियुक्त विवेचना कीजिए। 20

4. '' 'गोदान' में भारतीय जीवन का विराट चित्र प्रस्तुत किया गया है''—कथन की सार्थकता स्पष्ट कीजिए। 20

5. 'चंद्रगुप्त' नाटक में 'आर्य्य साम्राज्य के निर्माणकर्त्ता' के रूप में चाणक्य की भूमिका का मूल्यांकन कीजिए। 20

6. '' 'सरोज-स्मृति' में निराला का आधा दुख सरोज की मृत्यु के कारण है, आधा उनके अपने संघर्ष के कारण''—सोदाहरण पुष्टि कीजिए। 20

7. '' 'शेखर : एक जीवनी' एक व्यक्ति का अभिन्नतम निजी दस्तावेज ही नहीं है, उसमें समाज और युग भी बोलता है''—कथन पर विचार कीजिए। 20

8. '' 'अँधेरे में' कविता स्वातंत्र्योत्तर भारतीय समाज के मूल संघर्षों और स्वप्नों की विराट गाथा है''—प्रमाणित कीजिए। 20